Chap-1

प्रथम अध्याय

निराला जी का जीवन - व्यक्तित्व तथा काव्य कृतियों का संक्षिप्त परिचय

जीवन परिचय :- जन्मतिथि, जन्म स्थान, प्रारम्भिक जीवन, शिक्षा-दीक्षा, संगीत प्रेम, विवाह, संघर्षपूर्ण जीवन, अन्तिम दिन ।

व्यक्तित्व, वेशभूषा और केशविन्यास, औदार्य, आत्मभिमान, क्रान्तिकारी एवं विद्रोही व्यक्तित्व ।

काव्य कृतियाँ :- परिमल, अनामिका, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, गीतगुंज, सांध्य काकली ।

-:: महाप्राण - निराला का जीवन - परिचय ::-

"" महाप्राण " निराला " आधुनिक हिन्दी-साहित्य के सुदृढ़ स्तम्भ माने जाते हैं। उन्होंने आधुनिक हिन्दी को अपने विपुल साहित्य द्वारा समृद्ध बनाया और गौरवान्वित किया है। उनका जीवन स्वयं अपने में एक साहित्य है, जिसमें संघर्षों और वेदनाओं के ऐसे अनगिनत मार्मिक चित्रों की श्रृंखला सजी हुई है जिन्हें देखकर हम विचार करने लगते हैं कि निराला का जीवन पहले पढ़ें या उनका साहित्य। ""[1] "" यह सभी लोग जानते हैं कि उनका व्यक्तित्व एक उपन्यास के अच्छे खासे हीरो जैसा है। उसमें काफी वैचित्र्य और नाटकीयता है, इसलिये उनके जीवन पर एक बड़ी रोचक पुस्तक लिखी जा सकती है। ""[2] वस्तुत: उनका साहित्य उनके जीवन संघर्षों की ही कलात्मक साहित्यिक अनुभूति है, जिसका प्रमाण डा० रामविलास शर्मा द्वारा लिखित " निराला की साहित्य साधना नामक विशालकाय ग्रन्थ है। साहित्यिकों में जितने संस्मरण उन पर लिखे गये उतने शायद ही और किसी पर कभी लिखे गये हों। ""[3] लेकिन इन संस्मरणों और निराला सम्बन्धी अन्य साहित्य को पढ़कर यह धारणा बनती है कि उनके समकालीन साहित्यकारों में से बहुत लोगों ने उनके साथ न्याय नहीं किया। डा० रामविलास शर्मा, आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी तथा अमृतलाल नागर जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकारों

ने भी अपनी अपनी रचनाओं में इसकी पुष्टि की है। कुछ भी हो आज महाप्राण " निराला " को छायावाद के प्रवर्तकों में अन्यतम स्थान प्राप्त है। वे युग प्रवर्तक कवि के रूप में समादृत हैं।

महाप्राण " निराला " की जीवन रेखा प्रस्तुत करते हुए श्री विशम्भर अरुण ने कहा है "" इस कवि के जीवन का यह भी निरालापन है कि उनकी जीवनी के तथ्य स्वयं उनके जीवनकाल में ही उलझ गये थे। उनकी जन्मतिथि, उनके- जन्म स्थान आदि के सम्बन्ध में निश्चित, रूप से कुछ कह सकना विद्वानों के लिये प्राय: कष्ट साध्य रहा है। यद्यपि उन्हें स्वर्गस्थ हुए अभी कुछ ही वर्ष हुए हैं, तथापि उनके युग में रहते हुए भी हम उनके जीवन सम्बन्धी अनेक मुख्य तथ्यों के सम्बन्ध में भी निभ्रांत रूप से कह सकने में असमर्थ हैं। ""[4] ऐसी स्थिति में यह उचित होगा कि निराला जी की जीवन रेखा को स्पष्ट करने के लिए मुख्य मुख्य बिन्दुओं को पृथक पृथक लेकर उन पर प्राप्त विचार कर लिया जाये।

<u>जन्म तिथि</u> :- निराला जी की जन्म - जयन्ती वसन्त पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी) को मनायी जाती है, फिर भी इसे प्रामाणिक नहीं माना जा सकता क्योंकि उनकी जन्म तिथि के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न विद्वानों ने भिन्न भिन्न तिथियों का उल्लेख किया है। सर्वप्रथम डा० रामविलास शर्मा जी का मत लिया जा सकता है। शर्मा जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक " निराला की साहित्य साधना " में लिखा है कि "" माघ शुक्ल ११ संवत् १९५५, तदनुसार २१ फरवरी १८९९ को रामसहाय तेवारी के घर पुत्र जन्म हुआ। ""[5] ठीक इसके विपरीत आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी जी ने अपनी पुस्तक " कवि-निराला " में लिखा है कि "" निराला जी का जन्म माघ शुक्ल एकादशी संवत् १९५३

जनवरी सन् १८६७ को हुआ था । "[६]

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के मतानुसार महाकवि निराला का जन्म वसन्त पंचमी रविवार वि०सं० १६५५ सन् १८६६ ई० को हुआ था । "[७]

स्पष्ट है कि उपर्युक्त मतों के आधार पर निराला जी की वास्तविक जन्मतिथि के बारे में कोई स्पष्ट निर्णय नहीं किया जा सकता । " निराला जी की जन्म कुण्डली उनकी पुत्री सरोज द्वारा नष्ट की जा चुकी थी, अत: जन्मतिथि जानने का सबल आधार तो रहा ही नहीं । इसके अतिरिक्त निराला जी के परिवार में किसी बड़े बूढ़े से कोई विद्वान सम्पर्क नहीं कर पाया, जिससे वह सही जन्मतिथि का पता लगा सकता । "[८]

यद्यपि आज महाप्राण 'निराला' की जयन्ती वसन्त पंचमी को ही मनाई जाती है । स्वयं निराला जी के जीवनकाल में भी जयन्ती वसन्त पंचमी को ही मनाई जाती थी और स्वयं निराला जी इन जयंतियों में उपस्थित रहते थे, फिर भी वे कह दिया करते थे कि वसन्त पंचमी मेरा नहीं बल्कि सरस्वती - पूजन का दिन है ।

अधिकांश विद्वानों के मतानुसार निराला जी की जन्मतिथि सं० १६५३ वि० वसन्त पंचमी तथा सन् १८६६ ई० ही मानी गई है ।

जन्म-स्थान : " निराला जी का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले की महिषादल नामक रियासत में हुआ था । "[६] कवि के पूर्वज उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला गांव के रहने वाले थे । यह बैसवाड़े का छोटासा गांव है । निराला जी के पिता जी का नाम रामसहाय था । " रामसहाय जी का खेती में मन नहीं लगता था,

परदेश जाने के लिये वे सबसे ज्यादा उत्सुक थे। एक दिन भाइयों में कहा सुनी हो गई। रामसहाय ने हाथ की खुरपी खेत में गाड़ते हुए कहा - यह खुरपी तभी निकलेगी, जब परदेश से कमाकर लौटूंगा और तभी रामसहाय जी ने सत्तू-चबैना बांधा, लोटा-डोर लिया और बंगाल के लिये पलायन किया। कुछ देर पैदल चले, बाकी रास्ता रेल से तय किया। कलकत्ता पहुंचकर बैसवाड़े के लोगों से मिले।"[10] वहां रामसहाय जी ने अपने भाई रामलाल के साथ पुलिस की नौकरी की और तत्कालीन गवर्नर के अंगरक्षक पद पर नियुक्त हुए। एक बार गवर्नर महोदय दौरे में महिषादल गए थे, उस समय रामसहाय और रामलाल दोनों भाइयों के पुष्ट और प्रशस्त शरीर को देखकर महिषादल के राजा साहब ने गवर्नर से प्रार्थना की, कि वह इन दोनों भाइयों को उन्हें दे दें और गवर्नर ने उनका यह निवेदन स्वीकार किया। बंगाल में ऐसे हृष्ट पुष्ट व्यक्ति कम ही नजर आते थे, इसलिये राजा साहब का इनके प्रति विशेष आकर्षण था। महिषादल में ये दोनों भाई सपरिवार रहने लगे और वहीं निराला जी का जन्म हुआ, जो आगे चलकर सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" के नाम से ख्यात हुए।"[11]

<u>माता-पिता</u> : भावुक हृदय निराला माता की ममता को वांछित रूप से न पा सके। "तीन वर्ष की अवस्था में बालक के जीवन में एक कभी न पूरा होने वाला अभाव, छोड़कर माता स्वर्ग चली गई। कवि को अगिनत आ गये शरण में जन जननि से उस अभाव की पूर्ति करनी पड़ी।"[12]

निराला जी के पिता के दो विवाहों का उल्लेख मिलता है। डा० रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक "निराला" में स्पष्ट लिखा है कि महाकवि के "पिता पंडित रामसहाय अवध के सीधे सादे किसान थे जो

सिपाही बन गये थे। सिपाही की रुक्षता पहले से कुछ और बढ़ गई थी। यद्यपि अभी उनकी वैसी अवस्था न थी, फिर भी उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। पत्नी की मृत्यु के उपरान्त वे सत्रह साल तक और जीवित रहे और इन्फ्लुएंजा से उनकी अकाल मृत्यु हुयी।"[१३] लेकिन स्वयं डा० शर्मा ने इसी क्रम में पिता द्वारा निराला जी के पीटे जाने की घटनाओं का उल्लेख करते हुए निराला जी का कथन देते हुए लिखा है - "तीसरी बार अपने गांव में वैश्य के लड़कों के हाथ से पानी पीने के कारण फिर वही दशा हुई। मारते वक्त पिताजी इतने तन्मय हो जाते थे कि वे भूल जाते थे कि दो विवाह के बाद पाये हुए इकलौते पुत्र को मार रहे हैं। मैं भी स्वभाव न बदल पाने के कारण मार खाने का आदी हो गया था। चार-पांच साल की उम्र से अब तक एक ही प्रकार का प्रहार पाते पाते सहनशील भी हो गया था और प्रहार की हद भी मालूम हो गई थी।"[१४]

निराला जी के इस कथन से स्वत: स्पष्ट हो जाता है कि उनके पिता के दो विवाह हुए थे। आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी जी ने निराला जी के पूर्वजों का परिचय देते हुए उनकी मां का नाम रुक्मिणी बतलाया है। " कवि के पूर्वज उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला नामक गांव में रहा करते थे। उनके पितामह का नाम श्री शिवधारी त्रिपाठी था, जिनके चार लड़के थे - गयादीन, जोधा, रामसहाय तथा रामलाल। इन चारों भाइयों का यज्ञोपवीत और विवाह आदि शिवधारी त्रिपाठी ने ही किया था। शिवधारी जी त्रिपाठी के तृतीय पुत्र रामसहाय त्रिपाठी के प्रथम और एक मात्र पुत्र सूर्यकुमार था जो सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" थे। इनकी माता "दुबे" वंश की थीं और उनका नाम रुक्मिणी था। उनका पितृगृह फतेहपुर जिले में चांदपुर नामक गांव था।"[१५]

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि निराला जी को प्राप्त हुए कोमलता एवं ममत्व के गुण मां से तथा स्वभावगत अक्खड़ता, उद्दंडता, निर्भिकता आदि गुण पिता से मिले।

नाम: महाप्राण "निराला" के वास्तविक नाम का प्रयोग प्राय: लोग नहीं करते और उनके निराले व्यक्तित्व और कृतित्व के कारण उन्हें मात्र निराला के नाम से ही स्मरण करते हैं जो वस्तुत: इनका उपनाम है। जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है कि निराला जी का पैतृक और पारिवारिक नाम सूर्यकुमार है। इस नामकरण का कारण देते हुए श्री विशम्भर "मानव" ने लिखा है कि लोगों का कहना है कि निराला की माँ एक तो सूर्य का व्रत रखती थीं, दूसरे इनका जन्म रविवार को हुआ। यही कारण है कि इनका नाम सूर्यकुमार रखा गया।"[१६]

महाकवि ने इसी नाम को सन् १९१७-१८ के आसपास संशोधित कर सूर्यकान्त कर लिया। डा० बच्चनसिंह ने उनका पुराना नाम सूर्यप्रसाद बताया है, जो ठीक नहीं है क्योंकि रामकृष्ण मिशन के बंगाली भी इन्हें "सूरजो कुमार" के नाम से पुकारते और जानते हैं। स्पष्ट ही है कि "सूरजोकुमार" "सूर्यकुमार" का बंगला रूप है न कि सूर्यप्रसाद का।"[१७] मेरी दृष्टि से सूर्यकुमार और सूर्यप्रसाद का विवाद कोई महत्व नहीं रखता क्योंकि डा० बच्चनसिंह को छोड़कर लगभग सभी विद्वानों ने उनका प्रारम्भिक नाम सूर्यकुमार बताया है और साथ ही यह भी स्वीकार किया है कि कालान्तर में स्वयं कवि ने सूर्यकुमार को संशोधित कर सूर्यकान्त कर लिया था। गांव के लड़के जब उनके नाम के साथ उनकी प्रख्याति और उनके गांव की तुक मिलाकर "निराला मतवाला - गढ़ाकोलावाला" के नारे लगाते हुए उन्हें खिझाने का प्रयत्न करते तो वे प्रेम भरी मुस्कुराहट ही उन्हें अर्पित कर आगे बढ़ जाते थे।"[१८]

प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा - दीक्षा :-

"निराला जी की माता का देहान्त उस समय हो गया था, जब इनकी आयु तीन वर्ष की थी। इनका पालन - पोषण इनकी चाची तथा

मामी ने किया । "[१६] इनके पालन-पोषण का भार महिषादल के राजा साहब ने अपने पुत्रों का पालन करने वाली धाय को सौंप दिया । इस प्रकार बंगाल में महाकवि का प्रारम्भिक लालन-पालन राजकुमारों के साथ हुआ । जब वे पांच वर्ष के हो गये तो उनके अध्ययन के प्रबन्ध के साथ व्यायाम का प्रबन्ध भी किया गया । बड़े होने पर महिषादल राज्य के हाईस्कूल में ये प्रविष्ट हुए जहां इन्होंने नवी कक्षा तक शिक्षा पायी ।

प्रारम्भिक शिक्षा बंगाल में हुई फिर भी पारिवारिक वातावरण में ये बैसवाड़ी ही बोलते रहे । हिन्दी का परिमार्जित ज्ञान तो उन्हें आगे चलकर अपनी पत्नी से ही मिला । अंग्रेजी का ज्ञान उन्हें हरिपद घोषाल से मिला था । संस्कृत की ओर उनकी रुचि दर्शनशास्त्र और भारतीय संस्कृति में झुकाव के कारण थी । नवीं कक्षा में बंगला के साथ अंग्रेजी, संस्कृत इतिहास और गणित इनके अध्ययन के विषय थे । नवीं कक्षा तक तो यह जमकर पढ़े, किन्तु उसी समय इनका विवाह हो जाने के कारण पढ़ाई से इनका मन उचटने लगा । परिणामस्वरूप दसवीं की परीक्षा इन्होंने नहीं दी । एक परीक्षा में एक निबन्ध का प्रश्न आया था, "तुम अपने जीवन में क्या बनोगे ? निराला जी ने इसका उत्तर दिया था - मैं निराला बनूंगा । जब मैं कविता पाठ करूंगा तो अनुभूतियों की सामूहिक वर्षा होने लगेगी । जब मैं जनता के बीच चलूंगा तो लोगों के हृदय मनुष्योचित भावनाओं से आर्द्र होने लगेंगे । जब मैं अपना वरद हस्त उठाऊंगा तो देश का राष्ट्रपति भी (ध्यान रहे उस समय भारत परतंत्र था) साष्टांग प्रणाम करेगा और जब मैं करुणा से उमड़कर अश्रुसिक्त होऊंगा तो देश की देवियां अपने आंचल के दुलार में मुझे थपकियां देने लगेंगी इसलिये भी मैं निराला बनूंगा क्योंकि देश अभी गरीब है और अधिक दयनीयता का वरण आज के भारतीय साहित्यकारों को सिर्फ श्रेयस्कर नहीं है, अनिवार्य है तभी तो जनता का प्रतिनिधि साहित्य सृष्टा बन सकूंगा ।"[२०] कहने का तात्पर्य यह है कि निराला जी की स्कूली शिक्षा

नवीं कक्षा तक ही है। आगे की उच्च शिक्षा वे प्राप्त न कर सके। यह कमी उन्होंने अपने अध्यवसाय से पूरी की। उन्होंने जहां एक और वेदान्त दर्शन तथा विवेकानन्द के साहित्य का गहन अध्ययन किया, वहीं दूसरी और संस्कृत, बंगला, हिन्दी और अंग्रेजी के साहित्य का भी मनोयोगपूर्ण गहन अध्ययन किया उन्होंने व्याकरण और संगीतशास्त्र का भी ज्ञान अर्जित किया।

संगीत - प्रेमी :- निराला जी के गेय गीतों को देखने से पता चलता है कि वे संगीतशास्त्र में पूर्ण रूपेण दक्ष थे। ऐसा कहा जाता है कि निराला जी की कविता उन्ही के मुख से सुनने पर जितना प्रभावित करती थी, उतनी स्वयं पढ़ने पर नहीं। वे अपनी स्वर लहरी से जनता में आल्हाद, शौक, स्नेह, माधुर्य, विलास, अट्टहास और रौद्र गर्जन सभी का प्रसार कर सकते थे। वह संगीत के पारखी और स्वयं एक अच्छे गायक थे। "निराला जी को संगीत के प्रति बचपन से ही आकर्षण था। संगीत - साधना की प्रेरणा उन्हें महिषादल के राज परिवार के वातावरण में सहज रूप से प्राप्त हुई थी। घर पर वे राम चरित मानस का सस्वर पाठ किया करते थे। इससे उनका काव्य के साथ-साथ अवधी का ज्ञान भी बढ़ा। संगीत-प्रियता का भाव उनकी रचनाओं में इतना व्याप्त हुआ कि वे उसके विभिन्न मात्राओं का मंथन कर उन्होंने उसे जीवन के समरूप बना लिया है।"[२१]

निराला जी की पत्नी मनोहरादेवी का कंठ बहुत ही सुरीला तथा मधुर था। वे रामचरित मानस का पाठ बहुत ही मधुरता से करती थीं। डा० रामविलास शर्मा के मतानुसार "निराला में संगीत के प्रति आकर्षण मनोहरा की गेयता से हुआ था अपनी गेयता से मनोहरादेवी गांव की प्यारी बन गई थीं। निराला को जब उनके कंठ से - 'कंदर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम्' सुनने को मिला तो उनमें न जाने कौनसे सोते संस्कार जाग उठे। साहित्य इतना सुन्दर है, संगीत इतना आकर्षक है। उनकी आंखों ने जैसे नया संसार देखा, कानों ने ऐसा संगीत सुना, जो मानों

इस पृथ्वी पर दूर किसी लोक से आता हो । अपनी इस विलक्षण अनुभूति पर वह स्वयं चकित रह गये । अपने सौन्दर्य पर जो अभिमान था, वह चूर-चूर हो गया । ऐसा ही कुछ गायें, ऐसा कुछ रचकर दिखायें, तब कहीं जीवन सार्थक हो ।"[२२]

निराला जी के काव्य में सन्निहित सांगीतिक तत्वों को देखकर सहज ही प्रतीत होता है कि निराला का संगीतशास्त्र का अध्ययन गहन था । 'गीतिका' की भूमिका में काव्य और संगीत के सम्बन्ध में जो विचार कवि ने व्यक्त किये हैं तथा जिन राग-रागिनियों का परिचय प्रस्तुत करते हुए अपने गीतों से उदाहरण दिये हैं उन्हें देखने पर इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है । निराला ने विभिन्न राग-रागिनियों में गीतों की रचना की है । गीतों में ताल भी वही प्रयुक्त है जो सर्वाधिक लोक प्रचलित है । कवि ने स्पष्टत: लिखा है जो संगीत कोमल, मधुर और कानों को सुनने में प्रिय लगे वही वास्तविक संगीत है जिसको सुनने से हृदय में एक अलग प्रकार की आनन्दानुभूति प्राप्त होती है । वस्तुत: निराला के अधिकांश गीत राग-रागिनियों में गाये जा सकते हैं । गीतिका की भूमिका में निराला जी ने धम्मार, रुपक, झपताल, चौताल, तीन ताल तथा दादरा तालों का उल्लेख किया है । संगीत - शास्त्र में जिन तालों और रागों का उल्लेख है, उन सबके आधार पर निराला के गीत खरे उतरते हैं । निराला जी ने गीतिका के अतिरिक्त अर्चना, आराधना तथा गीतगुंज के गीतों में सांगीतिक नियमों का विराट आयोजन किया है ।

आपके काव्य में मुक्त छन्द की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसमें सर्वत्र संगीत की एक तरल धारा अन्त: सलिला की भांति प्रवाहित होती रहती है, जो उसे लयबद्ध कविता का सुन्दर और प्रभावशाली रुप प्रदान कर देती है ।"[२३]

कविता पाठ के समय ताल देने में वे तन्मय हो उठते थे । छन्द-शास्त्र में विभिन्न नवीन प्रयोग करने वाले निराला को ताल से स्वाभाविक प्रेम था ।

उनकी कवितायें उनके मुख से सुनने पर ही अधिक प्रभावशाली लगती थीं। मुक्त-छन्द की रचनाओं की नाटकीयता, स्वर का उत्थान-पतन तथा उसके सहज प्रभाव द्वारा भाव प्रदर्शन करना उनके पाठ की विशेषतायें हैं। चाहे "जुही की कली" के समान सौंदर्य प्रधान रचना हो, चाहे "समर में अमर कर प्राण" जैसी वीरतापूर्ण कविता हो, वह अपने उदात्त एवं मन्द स्वरों से भाव-सौन्दर्य को समान रूप से प्रकट कर सकते हैं।

विवाह :- जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है कि नवीं कक्षा में पहुंचते पहुंचते महाकवि का विवाह हो गया था। आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी के अनुसार "सन् १९११ में निराला जी का विवाह रायबरेली जिले के डलमऊ स्थान के निवासी श्री रामदयाल दुबे की पुत्री से सम्पन्न हुआ। निराला जी की पत्नी का नाम राय मनोहरा देवी था।"[२४] "डा० श्याम सुन्दर दास ने निराला के विवाह को बारह वर्ष की उम्र में, राहुल जी ने चौदह वर्ष की उम्र में और रामकृष्ण त्रिपाठी ने पन्द्रह वर्ष की उम्र के आसपास सम्पन्न हुआ बताया है।"[२५]

निराला जी के श्वसुर नवाबी युग के रईस मिजाज के व्यक्ति थे। ये मूलत: चांदपुर (फतेहपुर) के निवासी थे और अपनी पहली पत्नी के मायके की जायदाद प्राप्त होने के कारण डलमऊ (राय बरेली) में ही सपरिवार रहते थे। उन्होंने निराला जी का विवाह काफी दान-दहेज देकर बड़े समारोह से डलमऊ में ही सम्पन्न किया था। विवाह के एक वर्ष बाद ही उनका गौना करा दिया गया। गौना हो जाने के बाद निराला जी के पिता अपने पुत्र व पुत्रवधु के साथ महिष्यादल चले आये।

निराला जी के पुत्र श्री रामकृष्ण ने स्पष्ट लिखा है कि निराला जी ने पढ़ाई छोड़ देने से उनके पिता बड़े क्षुब्ध हुए और एक प्रकार से निराला जी को पत्नी सहित घर से निष्कासित कर दिया। परिणामस्वरूप निराला जी अपनी ससुराल डलमऊ चले आये और छ: मास तक यहीं रहे।

"दूध बादाम में सास का दिवाला निकालते निकालते छोड़ा। सूद की मालिश करवाई, कल्ली की संगति की।"[२६] वस्तुत: निराला जी के जीवन में ससुराल की यात्रा का यह प्रसंग सबसे मधुर है। उनकी पत्नी अत्यन्त सुन्दरी तथा विदुषी थीं। हिन्दी सीखने तथा कविता करने की प्रेरणा इन्हें अपनी पत्नी से ही मिली। जिस प्रकार कालिदास अपनी पत्नी विद्योत्तमा तथा गोस्वामी तुलसीदास अपनी पत्नी रत्ना से प्रताड़ना प्राप्त करने के बाद ही कवि बने थे वैसे ही निराला जी को भी अपनी पत्नी की मधुर प्रताड़ना से हिन्दी सीखनी पड़ी थी। स्वयं निराला जी ने लिखा है - "श्रीमती जी पूरे अधिकार में नहीं आ रही थीं। वह समझती थीं कि मैं और चाहे कुछ होऊं, हिन्दी का पूरा गँवार हूं और भला कौन पति अपनी पत्नी के सामने गँवार बनना पसन्द करेगा। फलत: न केवल उन्होंने अपनी पत्नी से हिन्दी सीखी, अपितु उसमें काव्य रचना कर उस भाषा पर अपने अधिकार का प्रमाण भी प्रस्तुत कर दिया।"[२७]

डलमऊ से उनके पिता उन्हें तथा पुत्रवधू को मना कर ले गये थे। १९१४ ई० में पुत्र श्री रामकृष्ण तथा १९१७ ई० में पुत्री सरोज का जन्म हुआ। वैवाहिक जीवन का सुख अधिक दिनों तक निराला जी के भाग्य में नहीं बदा था। श्रीमती मनोहरा देवी दो सन्तानों को जन्म देने के पश्चात् १९१८ ई० में इन्फ्लूएंजा की बीमारी से दिवंगत हो गईं। श्री गिरिशचन्द्र तिवारी ने अपनी पुस्तक 'कवि निराला' में एक भ्रामक बात लिख दी है कि निराला जी ने पहली पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरी शादी कर ली। इस सम्बन्ध में नन्द दुलारे बाजपेयी का कथन स्थिति को स्पष्ट रूप में उपस्थित करता है।

"पत्नी का देहान्त होने के पश्चात् ससुराल वालों ने एक अन्य कन्या का निराला जी से विवाह करने का प्रस्ताव किया। यह कन्या फतेहपुर जिले के किशनपुर गाँव के श्री जुगलकिशोर मिश्र की कन्या थी।

निराला जी ने विवाह करना अस्वीकार कर दिया और उस लड़की का विवाह अपने भतीजे बिहारीलाल से कर दिया ।[..२८] स्पष्ट है कि दूसरे विवाह के लिये उन पर चारों ओर से काफी दबाब डाला गया था । उनके पिता ने भी दो विवाह किये थे और उनके पुत्र के भी दो विवाह हुए किन्तु निराला जी ने केवल एक ही विवाह किया । कहने का तात्पर्य यह कि उनका जीवन पत्नी के प्रति एकनिष्ठता का उज्ज्वल उदाहरण है । इसके साथ ही उनकी पत्नी और पत्नी के जन्मस्थान ने भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से निराला की साहित्यिक साधना को प्रभावित किया है ।

संघर्षपूर्ण-जीवन :- संघर्ष ही जीवन है । इस कथन का मूर्तिमान रूप ही निराला जी का जीवन था । उनके जीवन की व्यथा कथा ने जिस विराट साहित्यिक सौन्दर्य की सृष्टि की है, उसका सर्वाधिक सुन्दर रूप पं० राम विलास शर्मा ने निराला की साहित्य साधना नामक अपनी वृहदकाय रचना के माध्यम से उद्घाटित किया है । वास्तव में उनके जीवन संघर्ष को समग्र रूप से प्रस्तुत करना एक दुष्कर कार्य ही है । अस्तु हम यहां उनके जीवन के अत्याधिक संघर्षपूर्ण बिन्दुओं का ही संक्षेप में उल्लेख करेंगे ।

पत्नी की मृत्यु का समाचार निराला जी को अचानक कलकत्ता में प्राप्त हुआ था और घर पहुंचने के साथ ही उन्हें अपने चचेरे भाई श्री बदलूप्रसाद, भाभी, चाचा, पं० रामलाल जी की मृत्यु के भी समाचार मिले । उनके पिता जी की दु:खद मृत्यु इन्हीं दिनों हुई ।

".. चार भतीजे और अपनी दो संतान का भार इक्कीस साल के युवक के कन्धों पर आ पड़ा । कन्या को जो अभी सवा साल की थी, नानी ने पाल पोसकर जीवित रखा ।"[..२९]

जीविकोपार्जन की समस्या भयंकर रूप धारण कर उनके सामने उपस्थित हुई । निराला के संघर्षों और अभावों की जो व्यथा कथा एक बार प्रारम्भ हुई । वह उनके अन्तिम काल तक चलती रही । परिणामस्वरूप वे न तो

अपने पुत्र रामकृष्ण की शिक्षा का उचित प्रबन्ध कर सके और न अपनी पुत्री सरोज का विवाह समुचित ढंग से कर पाये । अगणित दु:खों के प्रहार कवि को सहने पड़े, फिर भी वह अपने जीवन संघर्ष में न रुके और न झुके । कवि शिव की तरह अर्थ की असमर्थ व्यवस्था का गरलपान करता रहा लेकिन १६३५ ई० में जब उनकी प्राणों से अधिक प्रिय पुत्री का देहावसान हुआ तो उनका वज्र जैसा कठोर हृदय भी विदीर्ण हो उठा । कवि ने लिखा है कि --

" दु:ख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूं आज, जो नहीं कही । "[30]

उपरोक्त पंक्तियां महाकवि के संघर्षपूर्ण जीवन की ही सांकेतिक अभिव्यक्ति करती है ।

<u>अन्तिम दिन</u> :- निराला जी निरन्तर संघर्षशील रहे हैं । अन्तिम दिनों में अभावों तथा दु:खों से जूझते रहने के कारण वे अन्तर्मुखी हो गये थे और उनकी बातचीत में थोड़ी बहुत अव्यवस्था भी दिखाई देने लगी थी । मन ही मन कुछ बातचीत करते हुए अचानक ठहाका मारकर हंस पड़ना, अपने को रवीन्द्रनाथ का परिवारी बताना और चर्चिल, रुजवेल्ट आदि से होने वाली बातचीत का जिक्रकरना इन्हीं वर्षों की विकृतियां हैं, जो क्रमश: निराला जी पर हावी होने लगी थीं । उनके इस प्रकार के असन्तुलित व्यवहार को देखकर कुछ लोग उन्हें " पागल " की संज्ञा देते हैं किन्तु यह बात उचित नहीं है । यह ठीक है कि उनका जीवन अस्तव्यस्त सा हो गया था "किन्तु केवल इसीलिये उन्हें विक्षिप्त या पागल कहना उचित नहीं । कवि वैसे भी " एब्नार्मल " प्राणी होता है । मन, वचन और कर्म से वह अन्य सामान्य जनों की अपेक्षा कुछ असाधारण होता है इसलिये शेक्सपीयर ने कवि, प्रेमी और दार्शनिक को आधा पागल बतलाया है और निराला तो

न केवल कवि अपितु पत्नी के बिछोह में पीड़ित प्रेमी और वेदान्तवाद से प्रभावित दार्शनिक भी थे।[31]

उनके असन्तुलन का कारण उनकी आर्थिक और सामाजिक असंगतियाँ थीं। जिनसे उन्हें जीवन भर जूझना पड़ा था। उन्हें निरन्तर अभावों और दुःखों का गरल पीना पड़ा। शैशव में माँ का बिछोह, यौवन में पत्नी, पुत्री तथा पिता का देहावसान तथा अर्थ की विषम व्यवस्था ने उनमें विक्षेप उत्पन्न किया होगा। उनके स्वभाव की असाधारणता का एक कारण स्वामी शारदानन्द जी का प्रभाव भी माना जाता है इसका संकेत डा० रामविलास शर्मा ने भी किया है। निराला जी ने स्वयं स्वीकार किया है कि वे मिशन के स्वामी शारदानन्द जी को हनुमान का अवतार मानते थे। अपने लेखों में उन्होंने स्वामी जी के चमत्कारी प्रभावों का उल्लेख किया है और स्वयं को उनसे प्रभावित माना है। उन्होंने लिखा है कि वे उनके दर्शन मात्र से सुधबुध खो बैठते थे और फिर उनका मन पक्षी न जाने कहाँ उड़ने लगता था। वेदान्त का प्रभाव उन पर सर्वाधिक पड़ा था। इन सब कारणों से उनके आचरण को निराला तो कहा जा सकता है, किन्तु विक्षिप्त नहीं कहा जा सकता। जीवन के अन्तिम क्षणों तक वे अपने परिचितों को पहचानते रहे और अन्तिम वर्षों तक कविताएं भी लिखते रहे। इन सभी तथ्यों से स्पष्ट है कि वे विक्षिप्त नहीं हुए थे। अन्तिम दिनों में उनका जीवन दुःखों तथा अभावों से लड़ते हुए ही बीता। आर्थिक अभाव उनके जीवन में प्राय: हमेशा ही बना रहा और जब कभी उन्हें अच्छी धनराशि मिली तो उन्होंने उस राशि को किसी न किसी को दान में दे दिया। एक बार उन्हें २१०० रु० पुरस्कार स्वरूप मिले, तो पूरी राशि मुंशी नवजादिकलाल की विधवा पत्नी को सहायतास्वरूप दे दी।

" निराला जी ने पैसों की कभी परवाह नहीं की । जब पाया कर्णों के हाथों खर्च किया । वस्तु-संचयन के प्रति निराला की रुचि लेश मात्र भी नहीं रही । भोजन की परसी थाली तक बुढ़िया को नागपंचमी मनाने के लिये दे दी गई । अपनी एक बुढ़िया माँ की भिक्षावृत्ति समाप्त करने के लिये पूरे ३०० रु० निराला जी ने दिये हैं और खाली हाथ घर लौटे । इन सारी बातों के होते हुए वे अपने पारिवारिक कर्तव्य बोध के प्रति भी सर्वथा जागरूक थे और अन्तिम समय तक अपनी शक्ति और सामर्थ्य भर उसका निर्वाह भी किया है, जिसके पर्याप्त प्रमाण डा० रामविलास शर्मा ने अपने निबन्ध " मृत्युंजयी निराला " में दिये हैं । "[32]

अगस्त १९६० ई० में रुग्ण पड़े तो फिर कभी पूर्ण स्वस्थ हो ही नहीं पाये । प्राप्त विवरणों के अनुसार १५ जुलाई १९६१ से ही गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गये । यद्यपि १३ अक्टूबर को वे ३ घंटे तक भोजन बनाते रहे, किन्तु १४ अक्टूबर से उनकी दशा जो बिगड़ी, वह फिर सम्हल न पायी। १५ अक्टूबर सन् १९६१ ई० रविवार को चित्रकार कमला शंकर के दारागंज वाले मकान में प्रात: ९ बजकर २३ मिनिट पर साहित्याकाश का यह रवि भौतिक दृष्टि से सदा के लिये अस्त हो गया ।

महाप्राण निराला का व्यक्तित्व :-

महाप्राण पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी " निराला " का व्यक्तित्व भी नामानुरूप सर्वथा अद्वितीय तथा निराला था । बाह्य दृष्टि से उनका शरीर हृष्ट-पुष्ट, उच्च, उन्नत ललाट, विस्तृत वक्ष, गढ़ी हुई मांसपेशियाँ, सिन्धु तटवासी, ऐतिहासिक आर्यों का जीवन्त प्रतीक था । कामायनी में प्रथम सर्ग " चिंता " में मनु का वर्णन करते हुए प्रसाद की ये पंक्तियाँ -

" अवयव की दृढ़ मांस पेशियाँ
उर्जाप्लावित था वीर अपार
स्फीत शिरायें स्वस्थ रक्त का
होता जिनमें संचार ।

निराला के व्यक्तित्व को भी पूर्ण अभिव्यक्त करती है । निराला जी स्वस्थ एवं सुन्दर व्यक्ति थे । उनके ललाट, नेत्र, नासिका, अधर, केश, स्कन्ध, वक्ष, भुजाओं, जंघाओं और हाथ की उंगलियों की प्रशंसा में लेखकों ने श्रेष्ठतम विशेषणों का प्रयोग किया है । किसी ने पठान और किसी ने उन्हें ग्रीक देवता कहा है । देखने में प्राय: ऐतिहासिक काल के आर्य जैसे लगते थे और वृद्धावस्था में तो अपनी दाढ़ी के कारण ऋषि जैसे प्रतीत होते थे । उनकी लम्बाई ५ फुट ११ इंच थी ।

वेशभूषा और केश-विन्यास :-

इस सम्बन्ध में डा० बच्चन सिंह जी लिखते हैं कि "खादी का लंबा पंजाबी कुर्ता, लुंगी, पैरों में चप्पल अथवा उसका भी अभाव, ऐसे वेश में दारागंज की सड़कों से गुजरते हुए उन्हें कोई भी देख सकता था । कुछ समय पहले निराला का वेश-विन्यास बड़ा ही रोमांटिक था । धोती और कुर्ता साफ धुले हुए । इत्र से चुपड़ी हुई आय स्कन्ध केशराज इनके व्यक्तित्व में एक नवीन आकर्षण भर देती थी ।"[33]

श्री विशम्भर 'मानव' ने केश विन्यास आदि का विवरण देते हुए लिखा है -" निराला जी को देखिये, तो कभी लम्बे केश हैं तो कभी घुटा हुआ सिर, कभी मूँछें साफ हैं तो कभी घनी दाढ़ी । ऐसे ही कपड़ों में कभी धोती, कभी लुंगी, कभी लंबा कुर्ता, कभी नंगे बदन, कभी श्वेत वस्त्र, कभी गेरुए । सुगन्धित द्रव्यों का प्रयोग थोड़ा बहुत सब करते हैं पर निराला

के सम्बन्ध में प्रचारित है कि वे तेल के स्थान पर सिर में इत्र उडेलते थे। शरीर पर इत्र की मालिश करते थे। बालों को कस्तूरी और केशर से सुवासित रखते थे। इस प्रकार वेशभूषा और केशविन्यास को लेकर न जाने कितनी बातें फैल गयीं।[34]

सारांश यह है कि उनका बाहरी व्यक्तित्व भी आकर्षक और अद्वितीय था। उन्हें देखकर सचमुच श्रद्धा का एक अनोखा भाव मन में जागृत होता था और कवि दर्शन की एक विचित्र आन्तरिक अनुभूति होती थी।

उनके आन्तरिक व्यक्तित्व में औदार्य, आत्माभिमान, विद्रोही एवं क्रान्तिकारी आदि ऐसे अनेक गुण थे जो उनके काव्यात्मक व्यक्तित्व का निर्माण करते थे। वस्तुत: उनकी समस्त वृत्तियों का संकलन असम्भव है, फिर भी यहां उनके व्यक्तित्व में समाहित कुछ गुणों का संक्षेप में परिचय देना अनुपयुक्त न होगा।

<u>औदार्य</u> :- निराला जी मानवता के उच्चतम मानदण्डों में से एक हैं। मानवता की अनेक सद्वृत्तियों ने एक ही स्थान पर एकत्रित होकर उनके व्यक्तित्व का निर्माण किया था। उदारता, सरलता, स्पष्टवादिता, निष्कपटता और सहृदयता के वे मूर्तिमान रूप थे। बाह्य आडम्बर और कृत्रिमता को उन्होंने कभी महत्व नहीं दिया। परिणामस्वरूप बहुत से लोगों ने उनके व्यवहार में अनेक असंगतियां ढूंढ़ निकाली हैं। इसी के साथ ही कुछ विद्वानों ने उनकी व्यवहार की इन असंगतियों का शास्त्रीय विवेचन कर उसके अनेक कारण प्रस्तुत किये हैं। यहां हम अनावश्यक विवाद में न पड़कर हम केवल इतना ही कहना चाहेंगे कि निराला जी मूलत: मनुष्य थे। अत: यह सब नितान्त स्वाभाविक था। यदि उनके व्यवहार में कुछ असंगतियां थीं भी तो उनसे समाज को कोई हानि नहीं हुई। अत: उन्हें

वैयक्तिक दृष्टिकोण से भले ही महत्वपूर्ण मान लिया जाये पर सामाजिक दृष्टि से वह नगण्य है। उनके सम्बन्ध में उपलब्ध अधिकांश साहित्य से यह प्रतिपादित होता है कि वे उदारमना, उदार हृदयी महा मानव थे। उनकी उदारता के सम्बन्ध में अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं, जिससे उनकी करुणा और दानशीलता का परिचय मिलता है। ये कहानियाँ ऐसी नहीं है कि कल्पना से खड़ी की गई हों। लेखकों ने इन घटनाओं को अपनी आँखों से देखा है और अपने संस्मरणों में इसका उल्लेख किया है। उन्होंने किसी दरिद्र महिला के बच्चे पर शाल डाल दिया। सड़क के किनारे ठिठुरती किसी स्त्री को अपनी नई रजाई उढ़ाकर आगे बढ़ गए। नंगे पैर चलते देखकर किसी ग्वाले को अपने नये जूते पहना दिए, कोई इक्केवाला अपने बच्चों को पैसे माँगने पर एक पैसा नहीं दे पाया इसलिये उसे चार, छः आने के स्थान पर 5 रु० दे दिये। ट्रेन में संतों को दस दस के नोट बाँट दिए। किसी भिखारिन ने बेटा कह दिया तो जेब में जो कुछ था सब उसके आँचल में डाल दिया। प्रकाशक से जो रुपये मिले, वे गरीब विद्यार्थियों और परिचितों में बाँट दिए। सरकार से इक्कीस सौ रुपये का पुरस्कार मिला तो उसका संकल्प मित्र की विधवा पत्नी के नाम कर दिया आदि।

निराला के समान गुणों के पारखी बहुत कम ही मिलेंगे। कलाकारों की कला पर रीझकर वाह-वाह करने वाले तो अनेक व्यक्ति मिल जाते हैं, पर उनकी वास्तविक सहायता करने वाले एकाध ही होते हैं किन्तु निराला जी जब भी किसी के गुणों पर मुग्ध हुए तो उन्होंने अपनी सामर्थ्य भर उसकी वास्तविक सहायता की है। यहाँ एक बात और स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि निराला जी उदार होते हुए भी अपनी कर्तव्य चेतना के प्रति सतत् जागरुक थे।

आत्माभिमान :- डा० बच्चनसिंह ने लिखा है कि " निराला को जानने वाले प्रायः इस बात से परिचित हैं कि ये अपना जागृत अहं कभी भी नहीं

खो सके । यदि इनमें यह अहं न रहता तो हिन्दी महारथी के व्यंग्य घातों से या तो मैदान को छोड़कर भाग खड़े हुए होते, किन्तु अपने विरोधियों को देखते देखते इनकी विजय हुई । व्यवहारिक जगत में भी इनका अहं उतना ही जागरूक है । "[35] वैसे निराला जी का अहं, अहं की सीमा को तोड़कर आप में पर्यावसान कर गया था । जिन घटनाओं के आधार पर विभिन्न आलोचकों ने इन निष्कर्षों को निकाला है उनसे यह स्पष्ट व्यंजित होता है कि वस्तुत: उन्होंने अपने माध्यम से समस्त साहित्यकारों के सम्मान की रक्षा का प्रयत्न किया था । ऐसा नहीं है कि ये प्रयत्न सर्वथा विफल रहे । निश्चय ही साहित्यकार के आत्म सम्मान की रक्षा भी कुछ अंशों में हुई है । इसके साथ ही समाज के सामान्य आचरण की कुछ रूढ़ियां भी टूटी हैं । डा० रामविलास शर्मा का निम्न कथन इस सम्बन्ध में मनन योग्य है ।

" वे बनावटी शिष्टाचार तोड़ते हुए निर्द्वन्द्व भाव से बातें करते हैं । सुनने वाला क्या सोचेगा और क्या समझेगा इसकी उन्हें परवाह नहीं रहती । जब उन्होंने महात्मा गांधी से कहा था - मैं हिन्दीसाहित्य सम्मेलन के सभापति महात्मा गांधी से मिलने आया हूं, राजनीतिक नेता से नहीं, तब भी उनका यही भाव था । फैजाबाद के प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन में कुछ राजनीतिक नेताओं के हिन्दी साहित्य पर आक्षेप करने पर वहीं खड़े होकर उन्होंने मुंह तोड़ जवाब दिया । पं० जवाहरलाल से रेल की मुलाकात, पं०गोविन्द बल्लभ पन्त से लखनऊ और दूसरी जगहों की भेंट के पीछे हिन्दी के समर्थन का भाव काम करता रहा है । जो भी मनुष्य साहित्य को उचित स्थान नहीं देता, उसे ललकारने में वह कभी आगा पीछा नहीं करते । "[36]

डा० शर्मा ने इस सन्दर्भ में एक घटना का उल्लेख किया है जिसमें उन्होंने बतलाया है कि राजा साहब कुछ हिन्दी साहित्यकारों को साहित्यिक सहायता किया करते थे । एक बार लखनऊ में उनके आगमन पर एक सम्पादक ने उनके सम्मान में जलपान का आयोजन किया । इस अवसर पर एक

साहित्यकार ने सभी साहित्यकारों से राजा साहब का गरीब परवर ! यह अमुक है, यह अमुक कहकर परिचय कराया । निराला के समीप पहुँचकर उन्होंने गरीब परवर का सम्बोधन दोहराया ही था कि निराला जी खड़े हो गए और उन्होंने राजा साहब को अपना परिचय देते हुए कहा -" हम वह हैं जिनके बापदादा के बापदादों की पालकी तुम्हारे बाप दादों के बाप दादा उठाया करते थे ।"[36] इससे यह स्पष्ट होता है कि निराला जी में आत्माभिमान कूट कूट कर भरा हुआ था । उनका यह आत्माभिमान उनके अहं का वहं नहीं । वरन् समस्त कलाकारों की आत्म चेतना का समन्वित रूप था, जिसके सम्मान की रक्षा निराला जी ने आजीवन की ।

विद्रोही एवं क्रान्तिकारी :- निराला जी के जीवन को आद्यन्त रूप से देखने पर इनका व्यक्तित्व अतिशय क्रान्तिकारी सिद्ध होता है । साहित्य और समाज दोनों स्थानों में इन्होंने क्रान्ति की है । अनावश्यक रूढ़ियों के विरोध में खुलकर विद्रोह किया है । आधुनिक साहित्य के सर्वश्रेष्ठ क्रान्तिकारी कवियों में निराला जी का नाम आता है । जिसने कवियों में निराला जी का नाम आता है । जिसने स्वयं जीवन में संघर्ष किया है वही क्रान्ति की बातें, क्रान्ति के कार्य और क्रान्ति के सिद्धांतों का निर्वाह कर सकता है । "सामाजिक पारिवारिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में वह प्रत्यक्ष रूप से उलझे । किसी की परवाह न करते हुए उन्होंने सिद्धान्तों का निर्वाह किया । काव्य के क्षेत्र में " नव गति, नव लय, ताल छन्द नव " का आव्हान करने वाले निराला, माँ शारदा से प्राण पखेरू के लिए " नव स्वर नव पर " की याचना करते हैं ताकि वह स्वतन्त्र और स्वच्छन्द उड़ान भर सके, यही नहीं उन्होंने उस क्रान्ति कदम को बेहिचक उठाया ।"[37]

निराला विद्रोही कवि माने गए हैं । परम्परागत रूढ़ियों और मान्यताओं के प्रति निराला का विरोध और उनकी स्वच्छन्द वृत्ति इस विद्रोह का मुख्य कारण है । निराला जी के काव्य में यौवन का जोश

तथा स्वच्छन्द गति की तीव्रता समान रूप से मिलती है। भाग्य और नियति से विद्रोह करने का दृढ़ संकल्प भी निराला का स्वभाव है। मुक्त छन्द का विधान सबसे पहले इन्होंने किया। इनकी शैली का कितना विरोध हुआ, किन्तु इन्हें अपने मार्ग से कोई विचलित नहीं कर पाया। " निरपेक्ष गीतों का निर्माण सटीक और चुभते व्यंग्यों की सृष्टि कजली और गजल के विधान में सर्वत्र इनकी स्वच्छन्दप्रियता परिलक्षित होता है। इन्हें किसी प्रकार का बन्धन स्वीकार नहीं। किसी की रोकटोक से ये रुकने वाले नहीं थे।"[३८]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि निराला जी में विद्रोह की भावना कूट कूट कर भरी हुई थी।

- :: कृतित्व :: -

निराला जी के कवि जीवन का प्रारम्भ "जुही की कली" (सन् १९१६ ई०) से होता है। इसके बाद से ही निराला जी की काव्यधारा निरन्तर आगे बढ़ती रही।

सर्वप्रथम निराला जी का "अनामिका" नामक काव्य संग्रह सन् १९२२ ई० में प्रकाशित हुआ था परन्तु इस प्रथम संस्करण में केवल सात कविताएं ही संगृहीत थी परन्तु इनकी सातों कविताएं विभिन्न संकलनों में संकलित हो गई हैं। ऐसी स्थिति में अब परिमल को ही निराला जी की प्रथम काव्य कृति होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

परिमल (सन् १९३० ई०) :- यह निराला जी का प्रथम काव्य-संग्रह है। निराला जी की गीत-सृष्टि यहीं से प्रारम्भ होती है। परिमल के गीत

प्रकृति एवं ऋतु सौन्दर्य से सम्बन्धित है। ओजस्विता, प्रखरता और प्रवेग की दृष्टि से परिमल की कुछ रचनाएं नूतन दिशा का संकेत करती है। "जागो फिर एक बार", "महाराजा शिवाजी का पत्र", "बादल राग" आदि ऐसी ही रचनायें है। "यमुना में अतीत का स्वर्ण स्वप्न समाया हुआ है। ये सब छायावाद या स्वच्छन्दतावाद की नई भूमियां हैं जिनसे निराला जी का काव्य समृद्ध हुआ है। इन समस्त रचनाओं में प्रयास की कृत्रिमता कहीं नहीं है। ये यौवन काल की आस्थामयी अभिव्यक्तियां हैं।"[३९]

परिमल एक ऐसा काव्य-संग्रह है जिसमें उनके कवि रूप का सबल व्यक्तित्व अपनी पूरी विविधता में उभर कर "जुही की कली", "संध्या सुन्दरी", "यमुना के प्रति", "विधवा" तथा "भिक्षुक" जैसी कविताओं के साथ "बादल राग" के रूप में, न पूरी प्रचण्डता के साथ, गरज ही सका है वरन् "जागो फिर एक बार" के रूप में समूचे युग को अपनी निद्रा त्याग कर जाग उठने के लिए भी झकझोर सका है। "परिमल" की ये तथा अन्य कविताएं सचमुच इतनी मार्मिक रस सिक्त, प्रभावशाली एवं पूर्ण हैं कि मात्र उन्हीं के आधार पर वे वर्तमान हिन्दी कविता के निर्माताओं की प्रथम पंक्ति में प्रतिष्ठित किए जा सकते हैं।"[४०] इस संग्रह में विषय की दृष्टि से प्रार्थना परक, देश प्रेम, प्रकृति सम्बन्धित प्रेम तथा नारी सौन्दर्य से सम्बन्धित रचनायें अधिकांश मात्रा में दिखाई देती हैं। स्वयं निराला जी ने ७८ कविताओं को छंद रचना की दृष्टि से तीन खण्डों में विभक्त किया है। प्रथम खण्ड में सम मात्रिक – सान्त्यानुप्रास रचनाएं हैं। द्वितीय खण्ड में विषम मात्रिक सान्त्यानुप्रास कविताएं हैं तथा तृतीय खण्ड में मुक्त छन्द में लिखी गई कविताएं हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि "परिमल" निराला जी का एक श्रेष्ठ काव्य संग्रह है।

<u>गीतिका</u> (सन् १९३६ ई०) :- निराला जी की गीत रचनाओं का एक संग्रह "गीतिका" नाम से सन् १९३६ ई० में प्रकाशित हुआ। "गीतिका" के गीत शास्त्रीय राग-रागिनियों से बंधे हुए पूर्णतः गेय हैं और छायावादी

गीत सृष्टि के अत्याधिक सुन्दर रुप को व्यक्त करते हैं । गीतों की रचना विविध विषयों को लेकर की गई है । काव्यात्मक दृष्टि से "गीतिका" के पदों में भाव और भाषा सौन्दर्य का समुचित निर्वाह हुआ है । गीतिका द्वारा निराला जी ने हिन्दी गीति काव्य को एक नवीन दृष्टि दी थी । गीतिका के गीतों में संगीत तथा काव्य का समन्वय किया गया है । इसका कारण यह है कि वह स्वयं कुशल संगीतज्ञ थे । इस संग्रह में विषय की दृष्टि से विभिन्न प्रकार की रचनायें मिलती हैं जैसे प्रेम तथा नारी सौन्दर्य, प्रकृति चित्रण, देश प्रेम तथा राष्ट्रीयता, रहस्यात्मकता इत्यादि । इस प्रकार गीतिका में अनेक स्वरों का भंडार है । इसके १०१ गीतों की अंजलि में मानव मुक्ति साधना है, रहस्यात्मक संकेत है, नारी तथा प्रकृति का रुप चित्रण है और देश उत्थान के लिये उद्बोधन है । "[४१] परन्तु अधिकांश में श्रृंगारिक कविताओं की प्रधानता है ।

अनामिका (सन् १९३८ ई०) :- इस संग्रह में भाव एवं कलात्मक सौन्दर्य का सफल निर्वाह हुआ है । "परिमल" की भांति इसमें संग्रहीत कवितायें भाव एवं भाषा दोनों ही दृष्टियों से उच्च कोटि की है । "सरोज स्मृति" शोक गीत की परम्परा में एक नई कड़ी है । इसके अतिरिक्त "रेखा" नामक रचना में आत्म जीवनी के अंश दिखाई देते हैं । दूसरी ओर सामाजिक विद्रोह के भाव अधिक मुखर हुए हैं "प्रेयसी" कविता इसका उदाहरण है । "वन बेला" जैसी सामाजिक वैषम्य पर आक्रोश प्रकट करने वाली कृति भी है जिसमें एक अन्तर्व्याप्त करुणा की आभा प्रमुख हो गई है । सन् १९३७ ई० में लिखी गई "तोड़ती पत्थर नामक कविता में स्वर्गीय सौन्दर्य से उतरकर पृथ्वी की कुरुपता की ओर दृष्टिपात इस कविता की मूल विशेषता: है । शैली की दृष्टि से "खुला आसमान" जैसी यथा तथ्य चित्रण करने वाली प्रवृत्ति भी इस संग्रह में उपलब्ध होती है । अनामिका में उसे पूरी तरह खुलकर खेलने का अवसर मिला है । उसने इस कृति में न केवल अपने विविध क्षेत्रीय प्रसार को ही सूचित किया है वरन् "वन बेला", "नरगिस", "सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति",

"तोड़ती पत्थर" "सरोज स्मृति" तथा "राम की शक्ति पूजा" के रूप में अनेक मूल्यवान उपलब्धियाँ भी की हैं।

अनामिका की "प्रेयसी", "प्रेम के प्रति", "रेखा", "प्याला", मरण दृश्य", "अपराजिता", "प्राप्ति", "नारायण मिले हँस" अन्त में आदि रचनाएं रहस्यात्मक कविताएँ हैं। इसके अतिरिक्त "सेवा प्रारम्भ", "तोड़ती पत्थर" और "वे किसान की नई बहू की आँखें" आदि सामाजिक कविताएँ हैं।

"राम की शक्ति पूजा" में कलात्मक उत्कर्ष एवं नवीन दृष्टि विद्यमान है। इन कविताओं के आधार पर "अनामिका" को कवि की छायावादी कविता की एक अत्याधिक मूल्यवान देन माना जाता है।

तुलसीदास (सन् १९३९ ई०) :- "तुलसीदास" निराला जी का सर्वश्रेष्ठ कथाकाव्य तथा हिन्दी का अत्यन्त उच्च कोटि का खण्ड काव्य है। प्रारम्भ में कवि ने आलंकारिक रूप में भारतीय संस्कृति के सांध्यकाल का चित्रण किया है। मुगलों ने हिन्दु शासन को ही नहीं, वरन् हिन्दू सभ्यता और संस्कृति को भी ध्वस्त कर दिया।

"भारत के नभ का प्रभापूर्य
शीतलच्छाय सांस्कृतिक सूर्य
अस्तमित आज रे तमस्तूर्य दिग्मंडल
उर के आसन पर शिरस्त्राण
शासन करते हैं मुसलमान
है उर्मिल जल निश्चल प्राण कर शतदल।"[४२]

मुसलमानों के आक्रमण और अत्याचार के कारण भारतीय जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। कवि ने तत्कालीन उसी परिवेश को स्वर देने के लिए इस काव्य की रचना की।

तुलसीदास की वस्तु योजना नाटकीय गरिमा से पूर्ण है इसकी कथावस्तु कई मोड़ों को पार करती अन्तिम परिणति तक पहुंचती है। निराला जी मध्यकालीन भारतीय दुर्व्यवस्था के चित्रण के साथ तुलसी के जीवन वृत्त को भी प्रस्तुत करते हैं। वस्तुत: निराला की इस रचना में छायावादी कला का विकसित और प्रौढ़ रूप दृष्टिगत होता है।

<u>कुकुरमुत्ता</u> (सन् १९४२ ई०) :- इस रचना से निराला जी के काव्य में एक महत्वपूर्ण मोड़ की सूचना मिलती है वस्तुत: इस समय तक निराला सामाजिक तथा आर्थिक संघर्षों से बहुत अधिक पीड़ित हो चुके थे। समाज ने उनकी आकांक्षाओं पर जो अत्याचार किये थे। उसका स्पष्टरूप उनके व्यक्तित्व में दिखाई देने लगा था। वह युग द्वितीय महायुद्ध तथा बंगाल के अकाल का समय था इन सब परिस्थितियों ने निराला जी को अधिक व्यंग्यात्मक बना दिया था। कुकुरमुत्ता निराला के प्रगतिशील यथार्थवादी तथा व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण का प्रतिफलन है। यह रचना हास्य व्यंग्यात्मक कहलाती है जिसे प्रगतिशील काव्य में बहुत महत्व मिला।

कुकुरमुत्ता का सर्वाधिक व्यंग्य उस समाज वर्ग पर है जहां उच्च वर्ग के नीचे निम्न वर्ग उपेक्षित रहता है। कुकुरमुत्ता यहां निम्न वर्ग या श्रमिक वर्ग का प्रतीक है और गुलाब पूंजीवादी या शोषक वर्ग का। श्रमिकों का खून चूसकर पूंजीपति लोग ऐश्वर्य भोग करते हैं। कुकुरमुत्ता का कथानक बहुत ही साधारण है किन्तु निराला ने अपनी शैली में उसे अमर कर दिया है यही उसकी विशेषता है। इसके वाच्यार्थ से अधिक महत्व इसके व्यंग्यार्थ का है इसके व्यंग्य बहुमुखी हैं। अत: संक्षेप में कहा जा सकता है कि निराला जी का यथार्थवादी और व्यंग्यों से सजा हुआ यह सफल काव्य है।

<u>अणिमा</u> (सन् १९४३ ई०) :- इस समय तक निराला जी कष्टों एवं दु:खों को सहते सहते एकदम निराश हो गये थे। विपत्ति के समय ईश्वर ही एक मात्र

सहारा होता है इसलिये अणिमा के अधिकांश गीतों में वैयक्तिक निराशा और अवसाद का चित्रण है तथा ईश्वर के प्रति प्रणय निवेदन भी कहीं कहीं है। इसमें तीन प्रकार की रचनायें हैं। भक्ति प्रधान, विषाद मूलक तथा प्रशस्ति गान।

भक्ति प्रधान गीतों की प्रधानता है। इस संग्रह में साहित्यिक - मनीषियों, राजनीतिक नेताओं और धार्मिक महात्माओं के प्रति लिखी गई अनेक प्रशस्तियां भी हैं। "सन्त कवि रविदास", "महात्मा बुद्ध के प्रति", तथा स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की प्रशस्तियां हैं। सभी कवितायें प्राय: सामान्य स्तर की हैं। कहीं कहीं कवि का नैराश्य भाव इतना बढ़ गया है कि उसे मृत्यु निकट आते हुए दिखाई पड़ती है। "मैं अकेला" इस प्रकार की रचना है। इस संग्रह में निराला का प्रगतिवादी दृष्टिकोण स्पष्ट है इसमें यथार्थ के साथ साथ कहीं कहीं व्यंग्य भी समाविष्ट हो गया है। भाषा स्वच्छ, सरल एवं गतिशील है। संस्कृत के बोलचाल के शब्दों का तथा उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

"वास्तव में अणिमा संधि काव्य है। छायावाद और प्रगतिवाद के दुराहे पर खड़ा कवि अपने सारे साहित्यिक जीवन का लेखा-जोखा देकर नये मैदान में उतर रहा है। अनेक कविताओं में भाषा शैली तथा छन्द में पुरानापन है परन्तु कुछ कविताओं में कवि नये क्षेत्र में आ गया है।"[43] कवि की भक्ति-भावना इसी संग्रह से आरम्भ होती है जो अर्चना, आराधना तथा गीतगुंज तक प्रवाहित होती हुई दिखाई देती है।

<u>बेला</u> (सन् १९४६ ई०) :- इस संग्रह में स्वतन्त्र गीतों के अतिरिक्त अधिकतर गजल शैली की रचनायें हैं जिन्हें निराला जी ने उर्दू के अनुकरण पर लिखा है। इसके बारे में स्वयं निराला जी ने कहा है कि "बेला मेरे नये गीतों का संग्रह है इसमें प्राय: सभी तरह के गीत गेय हैं। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। गद्य करने की आवश्यकता नहीं है इसमें देशभक्ति के गीत भी हैं। बढ़कर नई बात यह है कि अलग अलग बहरों की गजलें भी

हैं, जिनमें फारसी के छंद-शास्त्र का निर्वाह किया गया है।"[४४] कहीं कहीं उर्दू मिश्रित हिन्दी का प्रयोग किया गया है और कहीं कहीं उर्दू के साथ संस्कृत, पदावली भी आ गई है। इस संग्रह में आध्यात्मिक, शृंगारिक, प्राकृतिक - सामाजिक, राजनीतिक और देश प्रेम आदि से संबंधित कवितायें हैं फिर भी प्रकृति - सम्बन्धी गीतों की प्रधानता है। कुछ गीतों में अलौकिक प्रेम की व्यंजना भी हुई है। कुछ कविताओं में उन्होंने पूंजीवादियों पर व्यंग्य लिखे हैं जैसे -

"देश को मिल जाये तो,
पूँजी तुम्हारी मिल में है
हार होंगे हृदय के,
खुलकर सभी गाने नये।"[४५]

इसके अतिरिक्त इन पर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव भी कहीं कहीं दिखाई पड़ता है। "जल्द जल्द पैर उठाओ" में क्रान्ति के लिये प्रोत्साहित किया है। अत: संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि इस संग्रह की रचनायें कला की दृष्टि से उत्कर्षमयी नहीं है किन्तु भाषा - भाव और शैली के क्षेत्र में कवि का यह एक नवीन प्रयोग अवश्य है।

नये-पत्ते (सन् १९४६ ई०) :- यह निराला जी की प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी रचनाओं का संग्रह है। इसमें व्यंग्य कविताओं की प्रधानता है। इस संग्रह की अधिकांश कविताओं में वर्ग-संघर्ष से पीड़ित समाज के प्रति निराला की संवेदना और सहानुभूति व्यक्त हुई है तथा सामाजिक एवं राजनीतिक व्यंग्यों की प्रधानता है। "गर्म पकौड़ी" और "प्रेमसंगीत" में भी सामाजिक व्यंग्य है। "प्रेम संगीत" में इन नवयुवकों पर व्यंग्य है जो किसी भी युवती को देखकर मरने लगते हैं जैसे -

"बम्हन का लड़का है, उसको प्यार करता हूँ
जात की कहारिन वह, मेरे घर की पनहारिन वह
आती है होते लड़का, उसके पीछे मैं मरता हूँ।"[46]

इस संग्रह में "वर्षा", "खजोहरा", "स्फटिक शिला", "कैलाश में शरद" आदि कविताएँ प्रकृति - चित्रण प्रधान हैं। "वर्षा" में वर्षा-कालीन, प्रकृति का स्वाभाविक चित्रण है। "खजोहरा" में वर्षाकालीन ग्राम्य वातावरण का वर्णन है। कविता के प्रारम्भ में कवि ने वर्षाकालीन बादलों का वर्णन किया है और उनकी उपमा हाईकोर्ट के वकीलों से दी है। वर्षा-ऋतु में जगह जगह पर आल्हा गाते हुए गाँववासी तथा झूला झूलते हुए, स्त्रियों का वर्णन किया है। "स्फटिक शिला" में चित्रकूट की यात्रा के मार्ग में आने वाले रम्य प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण किया है। "कैलाश में - शरद" में कैलाश यात्रा का वर्णन किया गया है। "नये पत्ते" का निराला जी के काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इस काव्य रचना से उनकी प्रगतिशीलता और सामाजिक यथार्थवादी दृष्टि अधिक प्रकाश में आई है।

अर्चना (सन् १९५० ई०) :- अर्चना भक्तिपरक गीतों का संकलन है। गीतिका में जहाँ निराला जी ने प्रेम तथा सौन्दर्य के गीत गाये वहाँ "अर्चना" में उन्होंने परमात्मा के चरणों में श्रद्धापूर्वक निवेदन किया। इसकी "भव-अरव की तरणी तरुणा", भक्ति वन्दना है। इसके अतिरिक्त होली से संबंधित - भी कई गीत हैं जिसमें लोक गीतों की लयात्मकता अधिक है। "फूटे हैं आमों में बौर" सभी गीतों में सबसे श्रेष्ठ एवं मधुर है। इसके सभी गीत कलात्मक तथा प्राणवान हैं। इनमें संस्कृत शब्दों की प्रधानता है, तथा उर्दू और फारसी भी प्रयुक्त है। "नये-पत्ते" की अपेक्षा "अर्चना" में आपकी भाषा अधिक समृद्ध है।

आराधना (सन् १९५० ई०) :- यह काव्य संग्रह अर्चना का ही अग्रिम रूप है । "" निराला जी ने पूजा के लिये जो अर्चना की थी वस्तुत: "आराधना" में वह आराधना बनी रही । कवि यहाँ एक सच्चे आराधक के रूप में दृष्टिगत होता है । ""[47]

निराला जी ने इसमें भी भक्तिपरक गीत लिखे हैं और मानवतावाद का यथार्थवादी वर्णन भी किया है । निराला जी के गीतों में संगीतात्मकता की तीव्रता ही उनकी आत्मा है । आराधना के गीतों में नाद और लय का अभाव नही है । इनके गीतों में नादात्मक तथा लयात्मक माधुर्य अपेक्षाकृत अधिक तीव्रता से अंकित हुआ है । "" आराधना में भक्ति गीतों की बहुलता के बाद भी जन जीवन और युग का चित्रण हुआ है । प्रकृति के चित्र यहाँ हैं, राष्ट्रीय भावना के गीत हैं, जागरण गीत हैं और लोक गीतों की सहज संबोध भाव भूमि है । यहाँ भी निराला का तटस्थ शृंगार दर्शन मिलता है अर्चना, आराधना उनकी असफलता की परिणति नहीं । वहाँ काव्य में एक नूतन प्रयोग और जीवन की एक आवश्यक उपलब्धि है । निराला काव्य का यह एक और नया आयाम है । ""[48]

इस संग्रह की भाषा शैली एकदम सरल एवं सुबोध है । संस्कृत शब्दों का काफी मात्रा में प्रयोग हुआ । अत: इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह सफल व श्रेष्ठ गेय-काव्य है ।

गीतगुंज (सन् १९५४ ई०) :- यह निराला जी के जीवनकाल का अन्तिम गीत संग्रह है । इसके गीत भी अर्चना एवं आराधना की परम्परा में ही हैं । इसमें कवि हृदय की साधना गहराई के साथ अंकित है । "" तुलसी, सूर, मीरा के गीतों में जो रंजन गुण है, वे यहाँ भी हैं । असल में निराला के ये गीत वैयक्तिक दु:खों के साथ साथ सामूहिक दु:खों को भी प्रकाशित करते हैं और ऐसा

तभी सम्भव हो सकता है जबकि बुद्धि का थोड़ा भी हस्तक्षेप हो । जहाँ तक बुद्धि तत्व के हस्तक्षेप की बात है, वह गीतगुंज में वर्तमान है ।"[४६]

विषय की दृष्टि से "गीतगुंज" में भक्ति, श्रृंगार, प्रकृति एवं व्यंग्य विषयक गीत है । भक्ति तथा प्रकृतिपरक गीतों की प्रधानता है । कवि को बादल के प्रति विशेष मोह रहा है । "बादल राग" कविता इसका प्रमाण है । बादल के क्रियाकलाप के माध्यम से कवि ने जीवन दर्शन को भी प्रस्तुत किया है । बादल की गड़गड़ाहट उसकी गर्जना आदि के साथ कवि ने मानवीकरण किया है जैसे -

"शाप तुम्हारा, गरज उठे सौ सौ बादल
　　ताप न बारा, काँपे पृथ्वी के तरु दल,
हर हर हरती समीर
　　जीवन यौवन अधीर
चले तीक्ष्ण तीक्ष्ण तीर ।"[५०]

गीतगुंज के गीतों को पढ़ने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि कवि ने आन्तरिक भावनाओं की अपेक्षा जीवन दर्शन को अधिक महत्व दिया है । इसमें कवि ने कल्पना की अपेक्षा यथार्थ को अधिक महत्व दिया है ।

<u>सांध्य काकली</u> (सन् १६६६ ई०) :- निराला जी का यह संग्रह उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित किया गया है । इसकी शैली भी "अर्चना", आराधना" और "गीतगुंज" से मिलती जुलती है । निराला जी वृद्धावस्था में जीवन के अन्तिम क्षणों को बड़ी निकटता से देख रहे थे परन्तु फिर भी निराशावादिता इनके गीतों की आत्मा को छू तक नहीं गई है । नाद-सौन्दर्य के कारण गीतों का सौन्दर्य एवं संगीतात्मकता और बढ़ गई है ।

" छनछन, छल-छल, जीवन प्रतिफल
बहता निर्मल, गंगा का जल
सौरभ जैसे समीर मलय से
विश्व विजय के से लेखन फल ।"[51]

अन्त्यानुप्रास का प्रयोग तथा लयात्मक एकरूपता के लिये निराला का शब्द नियोजन निम्नलिखित गीत में दर्शनीय है -

"वारि वन वन वारि
बन वारि - वन वारि,
वारिज विपुल वारि,
फल वारि - फल वारि
द्रुम लता - तुल वारि
कूल कलि - कुल वारि,
आकुल मुकुल वारि, विहंग संकुल वारि ।"[52]

इस गीत के द्वारा कवि, काव्य और संगीत को पारस्परिक संबंध में बांधने में सफल हुए हैं। संगीतात्मक तत्वों के बाद भी इस गीत के भाव में कोई अन्तर नहीं आता है और न ही काव्यत्व के कारण संगीत में अन्तर आता है। अत: यह स्पष्ट हो जाता है कि काव्य और संगीत का पारस्परिक संबंध है।

निराला जी की सम्पूर्ण काव्य रचनाओं के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उनके गीत सांगीतिक तत्व और काव्य-तत्व से पूर्ण हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

लेखक का नाम	पुस्तक कानाम	पृष्ठ क्र०
१ श्री विशम्भर "अरुण"	निराला	६
२ डा० रामविलास शर्मा	निराला	११
३ श्री विशम्भर "मानव"	काव्य का देवता "निराला"	१४
४ श्री विशम्भर "अरुण"	निराला	६
५ डा० रामविलास शर्मा	निराला की साहित्य साधना	१७
६- नन्द दुलारे बाजपेयी	कवि निराला	१६३
७ हजारी प्रसाद द्विवेदी	महाकवि निराला	१
८ श्री विशम्भर "अरुण"	निराला	१०
९ नन्द दुलारे बाजपेयी	कवि निराला	१६३
१० राम विलास शर्मा	निराला की साहित्य साधना	१६
११ नन्द दुलारे बाजपेयी	कवि निराला (परिशिष्ट)	१६३-१६४
१२ डा० रामविलास शर्मा	निराला	१
१३ डा० रामविलास शर्मा	निराला	१
१४ डा० रामविलास शर्मा	निराला	१
१५ नन्द दुलारे बाजपेयी	महाकवि निराला (परिशिष्ट)	२१५
१६ श्री विशम्भर "मानव"	काव्य का देवता "निराला"	६
१७ श्री विशम्भर "अरुण"	निराला	१३
१८ नन्द दुलारे बाजपेयी	कवि निराला	२१६
१९ श्री विशम्भर "अरुण"	निराला	१४
२० श्री विशम्भर "अरुण"	निराला	१४
२१ राम अवध शास्त्री	निराला व्यक्ति और कवि	६-७
२२ डा० राम विलास शर्मा	निराला की साहित्य साधना	३०
२३ डा० शशी प्रभा सिन्हा	निराला	२२
२४ नन्द दुलारे बाजपेयी	कवि निराला	२१६

लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्र०
२५ सं० डा० पदमसिंह शर्मा "कमलेश"	निराला	१४
२६ डा० रामविलास शर्मा	निराला	५
२७ सं० डा० पद्मसिंह शर्मा "कमलेश"	निराला	१५
२८ नन्द दुलारे बाजपेयी	कवि निराला	२१७
२९ डा० रामविलास शर्मा	निराला	६
३० निराला	अनामिका	१३४
३१ सं० पदमसिंह शर्मा " कमलेश "	निराला	१६
३२ डा० रामविलास शर्मा	निराला	१६४
३३ डा० बच्चनसिंह	निराला	१८
३४ श्री विशम्भर " मानव "	काव्य का देवता " निराला "	१७
३५ श्री पद्मसिंह शर्मा "कमलेश "	निराला	१९
३६ राम विलास शर्मा	निराला	३१
३७ डेजी वालिया	निराला की संगीत साधना	१५
३८ श्री बच्चनसिंह	निराला	२०
३९ डेजी वालिया:	निराला की संगीत साधना	१७
४० डा० शिव कुमार मिश्र	नया हिन्दी काव्य	७७
४१ वेदव्रत शर्मा	निराला के काव्य बिम्ब और प्रतीक	५०६
४२ निराला	तुलसी दास	११
४३ डा० रामरतन भटनागर	कवि निराला	२२३
४४ निराला	"बेला आवेदन	१
४५ निराला	बेला	७५
४६ निराला	नये पत्ते	४६
४७ डा० शशी प्रभा सिन्हा	निराला के काव्य प्रतिमान	४७
४८ धनंजय वर्मा	निराला काव्य का पुनर्मूल्यांकन	१३०

लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्र०
४६ गोपाल जी स्वर्ण किरण	निराला स्मृति ग्रन्थ	६
५० निराला	गीतगुंज	३७
५१ निराला	सांध्य काकली	८०
५२ निराला	सांध्य काकली	५४